शोध परिधि ISSN-2349-9575
साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

डॉ. जयप्रकाश कर्दम द्वारा रचना कृत 'छप्पर' उपन्यास में मानवीय संवेदना : एक अनुशीलन

डॉ. जीत सिंह
स0प्रो0 हिन्दी
कु0 मा0 रा0 म0 महावि0, बादलपुर
(गौ0बु0नगर)

शोध सारांश

छप्पर उपन्यास दलित साहित्य की अनिवार्य कृति है जो सामाजिक भेदभाव, अन्याय, शोषण, अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष करती है। यह संवेदनाओं से परिपूर्ण एवं सशक्त कृति है। मुंशी प्रेमचन्द की परम्परा को और आगे गतिशील बनाती है। उपन्यास में छोटी मछली बड़ी मछली को निगल जाती है। जैसी सा र्थक कहावत सार्थक परिलक्षित होती है। शोध लेख ईमानदारी, मेहनत, न्याय और कर्मठता के सशक्त पक्षधर है। लेखक ने प्राचीन वपरम्परा, रीति-रिवाज, अन्धविश्वास को तोड़कर वैज्ञानिक गतिशील, उर्जावान परम्परा को जोड़ने का सार्थक प्रयास किया है।

डॉ. जयप्रकाश कर्दम द्वारा रचना कृत 'छप्पर' उपन्यास दो संस्करणों में विभाजित है। शोध पत्र का शोध क्षेत्र प्रथम संस्करण ही लिया गया है जो कुल अठ्ठारह अध्यायों में विभाजित है। डॉ. साहब का जन्म 5 जुलाई 1958 को ग्राम इन्दरगढ़ी गाजियाबाद (उ.प्र.) में एक दलित परिवार में हुआ। जन्म से ही शिक्षा की ललक और सामाजिक चेतना का अथक प्रयास जीवन का परम लक्ष्य ही रहा। सरकारी सेवा में उच्च पदस्थ होते हुए भी दलित साहित्य के रचना संसार में अहम् भूमिका रहती है। डॉ. साहब एक मात्र दलित साहित्यकार ऐसे हैं जो किसी भी वाद से परे हैं। कोई भी अतिश्योक्ति नहीं है जो निरपेक्ष साहित्यकारों की गिनती में आते हैं। आपकी कार्यशैली और जीवन शैली अद्वितीय एवं विकास की अनवरत प्रक्रिया से जुड़ी है।

डॉ. जयप्रकाश कर्दम का रचना संसार : -

दो दर्जन पुस्तक प्रकाशित। छप्पर - दो संस्करण, गंगा नहीं था मैं, शमशान का रहस्य, बौद्ध धर्म के आधार स्तम्भ, अम्बेडकर वादी आन्दोलन दशा और दिशा, इक्कीसवीं सदी में दलित आन्दोलन समाज एवं साहित्य चिन्तन, जाति : एक विमर्श, धर्मान्तरण और दलित, चमार तथा रागदरबारी का समाजशास्त्रीय अध्ययन, ब्राह्मणवाद